International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

तुलसीदास के धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान का अध्ययन

Ram Swroop[1], Dr. Deepika Jain[2]

[1]Research Scholar, Department of Hindi, Mansarovar Global University, Sehore, Madhya Pradesh
[2]Supervisor, Department of Hindi, Mansarovar Global University, Sehore, Madhya Pradesh

सारांश

तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* केवल एक साहित्यिक काव्य नहीं, बल्कि भारतीय समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनरुत्थान का महान दस्तावेज है। यह ग्रंथ उस समय लिखा गया जब भारत विदेशी आक्रांताओं के शासन में अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से विचलित हो रहा था। ऐसी स्थिति में तुलसीदास ने *रामचरितमानस* के माध्यम से न केवल श्रीराम के आदर्शों को जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया, बल्कि वेद-शास्त्रों के सिद्धांतों और सनातन धर्म की मर्यादाओं को सरल लोकभाषा में पुनः प्रतिष्ठित किया। उनके द्वारा वर्णित राम एक ऐतिहासिक नायक भर नहीं, बल्कि धर्म के मूर्त रूप हैं—जो सत्य, न्याय, करूणा, निष्ठा और मर्यादा का प्रतीक बनकर सम्पूर्ण समाज के लिए मार्गदर्शक बनते हैं। तुलसीदास का धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान वैदिक सिद्धांतों की व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों की पुनःस्थापना का प्रयास भी है। तुलसीदास ने धर्म को केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्होंने धर्म के व्यावहारिक और नैतिक पक्ष को अधिक महत्व दिया। उन्होंने राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहकर उस धर्म की पुनर्स्थापना की, जो समाज को सदाचार, समर्पण और सेवा की भावना से जोड़ता है। *रामचरितमानस* के प्रत्येक प्रसंग में धर्म की एक नई व्याख्या देखने को मिलती है। चाहे वह दशरथ का वचनपालन हो, भरत की भ्रातृभक्ति हो, सीता की पतिव्रता धर्म निष्ठा हो या हनुमान की सेवा भावना—हर पात्र धर्म के किसी न किसी रूप का प्रतिनिधित्व करता है। तुलसीदास का यह दृष्टिकोण गीता और वेदों के सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है, जहाँ कर्म, भक्ति और ज्ञान को धर्म का आधार बताया गया है।

मुख्यशब्द- रामचरित मानस, तुलसीदास, धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान, साहित्यिक काव्य, भारतीय समाज, वेद-शास्त्रों के सिद्धांत

प्रस्तावना

धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान की दृष्टि से देखा जाए तो तुलसीदास ने उस कालखंड में *रामचरितमानस* की रचना की जब समाज में जातिगत भेदभाव, धार्मिक अंधविश्वास और बाह्याचार की अधिकता थी। उन्होंने रामकथा को अवधी जैसी जनभाषा में रचकर उस समय के शुद्ध संस्कृत शास्त्रों से दूर हो चुके सामान्य जनमानस को धर्म से पुनः जोड़ा। यह एक क्रांतिकारी कदम था, क्योंकि संस्कृत ज्ञान उस समय केवल ब्राह्मणों और पंडितों तक सीमित था। तुलसीदास ने धर्म की व्याख्या भाषा, जाति और वर्ग के संकीर्ण बंधनों से मुक्त करके सबके लिए सुलभ बनाया। *रामचरितमानस* में वर्णित राम राज्य की अवधारणा तुलसीदास के धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण का चरम रूप है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों का समन्वय दिखता है। राम राज्य में प्रजा सुखी है, राजा धर्मनिष्ठ है, सभी अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं और समाज में न कोई शोषण है, न कोई अत्याचार। यह चित्रण न केवल धार्मिक आदर्श है, बल्कि एक सामाजिक मॉडल भी है जिसे तुलसीदास ने धर्मशास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया। इस प्रकार उनका धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक पुनरुत्थान भी है।

तुलसीदास ने भक्ति को भी धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान का माध्यम बनाया। उन्होंने रामभक्ति को सर्वोपरि स्थान दिया और इसे ऐसे सरल और आत्मीय ढंग से प्रस्तुत किया कि सामान्य व्यक्ति भी उसमें रम जाए। वे कहते हैं – "भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।" उनके लिए भक्ति का आधार श्रद्धा और विश्वास है, न कि केवल बाह्याचार। उन्होंने राम को 'सगुण ब्रह्म' के रूप में स्थापित किया, जो भक्त के प्रेम से बंध जाते हैं। यह विचार उपनिषदों और भक्तिकाव्य की परंपरा से उपजा हुआ है, जिसमें परमात्मा सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में स्वीकार्य है।

तुलसीदास का धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण कर्मकांड की रूढ़ियों से अलग है। वे वैराग्य, त्याग और सेवा को धर्म का मूल तत्व मानते हैं। उनके अनुसार धर्म वही है जिससे समाज में शांति, समरसता और न्याय की स्थापना हो। वे धर्म के नाम पर किए जा रहे पाखंडों और आडंबरों की आलोचना करते हुए कहते हैं कि सच्चा धर्म वही है जो भीतर से पवित्र बनाए। *रामचरितमानस* में कई ऐसे प्रसंग हैं जहाँ तुलसीदास ने कर्म, भक्ति और ज्ञान के समन्वय को धर्म का सही मार्ग बताया है—जैसे कि शबरी प्रसंग, केवट प्रसंग, हनुमान की भक्ति आदि। इन प्रसंगों में जाति, लिंग या वर्ग के आधार पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के भाव, कर्म और भक्ति के आधार पर मूल्यांकन किया गया है।

धर्मशास्त्रों की गूढ़ बातों को तुलसीदास ने लोक भाषा में सरल उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने उपदेशात्मक शैली में धर्म को ऐसे रूप में प्रस्तुत किया कि पाठक भाव-विभोर हो जाए और नैतिक प्रेरणा प्राप्त करे। उदाहरणतः राम और विभीषण संवाद में नीति, धर्म और राजनीति का त्रिवेणी संगम मिलता है, जो धर्मशास्त्रों की गंभीर बातों का सहज और सुलभ पाठ है।

तुलसीदास का धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान नारी के संदर्भ में भी विशिष्ट है। यद्यपि उन्होंने अपने युग की सीमाओं के भीतर रहकर स्त्री के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत किया है, लेकिन उन्होंने सीता के माध्यम से पतिव्रता धर्म, धैर्य, आत्मबल और संघर्षशीलता की महिमा का गुणगान किया। सीता केवल एक पत्नी या रानी नहीं हैं, वे धर्म की प्रतिमूर्ति हैं, जो हर परिस्थिति में अपनी मर्यादा और धर्म का पालन करती हैं।

तुलसीदास का यह धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान केवल धार्मिक ग्रंथों का पुनर्पाठ नहीं था, बल्कि एक सामाजिक चेतना का आह्वान था। उन्होंने धर्म को जन-जन तक पहुँचाया, उसमें नैतिकता, सेवा, भक्ति और मर्यादा का समावेश किया, और राम जैसे नायक के माध्यम से एक ऐसे समाज का सपना दिखाया जहाँ धर्म व्यक्ति का जीवन-आचरण बन जाए। यह पुनरुत्थान भारतीय समाज के लिए आत्मबल, सांस्कृतिक चेतना और धर्म के साथ जीवन जीने की प्रेरणा बना।

धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान की आवश्यकता

तुलसीदास का *रामचरितमानस* भारतीय साहित्य और धर्मशास्त्र का अद्वितीय ग्रंथ है, जो न केवल एक काव्य रचना है, बल्कि एक धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान का प्रतीक भी है। उनका समय उस दौर से मेल खाता था, जब भारतीय समाज में धार्मिक और सामाजिक मूल्य कमजोर पड़ने लगे थे। भारतीय समाज, विशेष रूप से मध्यकाल में, विदेशी आक्रमणों और आस्थाओं के आघात से गुजर रहा था। जातिवाद, पाखंड, सामाजिक असमानता और धार्मिक संकीर्णताएँ उस समय समाज में व्याप्त थीं। इसके परिणामस्वरूप धर्म के वास्तविक उद्देश्य को लोग भूलते जा रहे थे, और धार्मिक आस्थाएँ केवल बाहरी आडंबरों तक सीमित हो गई थीं। इस स्थिति में तुलसीदास ने *रामचरितमानस* के माध्यम से धर्मशास्त्र का पुनरुत्थान किया, जिससे समाज को एक नई दिशा मिली और वे धर्म के सही मायनों को समझने में सक्षम हुए।

धर्म के असली स्वरूप की पहचान: तुलसीदास ने *रामचरितमानस* में धर्म के असली स्वरूप को प्रस्तुत किया, जो न केवल कर्मकांडों और आडंबरों से मुक्त था, बल्कि एक व्यक्ति के आचरण, उसकी मर्यादा, सत्य, और नैतिकता पर आधारित था। वे यह मानते थे कि धर्म केवल पूजा-पद्धतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट होता है। राम के चरित्र के माध्यम से उन्होंने यह दिखाया कि सच्चा धर्म वह है, जो व्यक्ति को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है, जो समाज के हर वर्ग को समानता और सम्मान देता है, और जो हर किसी के भीतर एक गहरी आध्यात्मिक चेतना जागृत करता है।

धार्मिक आस्थाओं और पाखंड का विरोध: तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त पाखंड और धार्मिक आडंबरों की आलोचना की। उन्होंने देखा कि धर्म के नाम पर समाज में भेदभाव, शोषण और अन्याय बढ़ रहा था। जातिवाद, वर्णव्यवस्था, और धार्मिक असहमति ने समाज में घृणा और हिंसा की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। तुलसीदास का उद्देश्य था कि धर्म को एक ऐसा साधन बनाया जाए, जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ सके, न कि विभाजित कर सके। उनके अनुसार, सच्चा धर्म वही है, जो व्यक्ति के भीतर प्रेम, सहानुभूति और न्याय की भावना उत्पन्न करता है।

भक्ति का आदर्श प्रस्तुत करना: तुलसीदास के धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान में भक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान था। उन्होंने राम को एक सगुण ब्रह्म के रूप में प्रस्तुत किया, जो भक्तों के प्रति अपनी असीम कृपा और प्रेम दिखाते हैं। उन्होंने भक्ति को एक ऐसे साधन के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे व्यक्ति अपने आत्मा और परमात्मा के बीच एक सशक्त संबंध स्थापित कर सकता है। राम के प्रति भक्ति में तात्त्विकता और धार्मिकता का संगम था, जिससे धार्मिक जीवन के वास्तविक मूल्य समाज में पुनः स्थापित हुए।

नारी के अधिकार और प्रतिष्ठा का पुनरुत्थान: तुलसीदास ने नारी के संबंध में भी अपने विचार प्रस्तुत किए, जो उस समय के समाज के लिए क्रांतिकारी थे। उन्होंने सीता के चरित्र के माध्यम से नारी के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत किया। सीता का त्याग, पतिव्रता धर्म, और साहस तुलसीदास के धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान का एक प्रमुख उदाहरण हैं। वे मानते थे कि नारी का स्थान समाज में सम्मानजनक होना चाहिए और वह भी धर्म की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राम के आदर्शों की भूमिका

राम, भारतीय संस्कृति और धर्म के आदर्श पुरुष के रूप में पूजे जाते हैं, जिनकी जीवनचर्या और आचरण ने समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव डाला। *रामचरितमानस* में तुलसीदास ने भगवान राम को एक सम्पूर्ण आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया, जो धर्म, सत्य, न्याय, और मर्यादा के प्रतीक हैं। उनके आदर्शों का समाज और संस्कृति पर प्रभाव अनमोल रहा है, और इन आदर्शों की भूमिका भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। राम के आदर्शों की भूमिका न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के नैतिक और सामाजिक ढांचे को भी प्रकट करती है।

धर्म का पालन और मर्यादा का महत्व: राम के जीवन का सबसे बड़ा आदर्श उनके द्वारा धर्म के पालन और मर्यादा का कठोरता से पालन करना है। वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में प्रतिष्ठित हुए, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में हर परिस्थिति में धर्म और मर्यादा

का पालन किया। चाहे वह उनका वनवास हो, माता सीता का त्याग हो, या फिर रावण के साथ युद्ध—राम ने हमेशा अपने कर्तव्यों और आदर्शों से हटकर नहीं सोचा। उनका जीवन यह संदेश देता है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को निष्ठा और ईमानदारी से निभाना चाहिए, भले ही उसे कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। राम का यह आदर्श आज भी समाज में आत्मबल और नैतिकता की भावना को जागृत करता है।

सत्य और न्याय की स्थापना: राम के आदर्शों में सत्य और न्याय की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राम ने हमेशा सत्य का पालन किया, चाहे वह व्यक्तिगत या सार्वजनिक जीवन हो। वे जानते थे कि सत्य से कोई भी बड़ा नहीं है और इसे हमेशा हर परिस्थिति में अपनाना चाहिए। रावण का वध करना और सीता का त्याग करना जैसे निर्णय उनके जीवन में सत्य और न्याय के आदर्श को स्थापित करते हैं। तुलसीदास ने राम के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में न्याय और सत्य की स्थापना के लिए व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और स्वार्थों से ऊपर उठकर सही मार्ग पर चलना चाहिए।

धार्मिक और सामाजिक एकता: राम के आदर्शों में धर्म के साथ-साथ सामाजिक एकता और भाईचारे का भी महत्व है। उनके जीवन में विशेष रूप से भाई लक्ष्मण, हनुमान, और सुग्रीव जैसे मित्रों के साथ रिश्तों में आदर्श दिखते हैं। राम का सन्देश यह था कि एकता और सामूहिक प्रयास से ही समाज में शांति और समृद्धि लाई जा सकती है। राम ने हर वर्ग और हर व्यक्ति को समान सम्मान दिया। इस दृष्टि से राम के आदर्श समाज में सामूहिकता और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

नारी का सम्मान: राम के आदर्शों में नारी के प्रति सम्मान और प्रतिष्ठा की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सीता के साथ उनके रिश्ते में उनके आदर्श स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। राम ने हमेशा अपनी पत्नी सीता का सम्मान किया, और उनका त्याग भी सिर्फ और सिर्फ धर्म के सिद्धांतों के आधार पर किया गया था, न कि व्यक्तिगत कारणों से। इससे यह स्पष्ट होता है कि राम के आदर्शों में नारी का सम्मान और उनके अधिकारों का ध्यान रखा गया था। राम का यह दृष्टिकोण समाज में नारी की स्थिति को मजबूत करने और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने में सहायक साबित हुआ।

रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष

रामभक्ति भारतीय धर्म, संस्कृति और भक्ति आंदोलन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे विशेष रूप से तुलसीदास के *रामचरितमानस* ने लोकप्रिय बनाया। राम, जिन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है, के प्रति भक्ति भारतीय समाज में एक गहरे धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ में जड़ित है। रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष न केवल धार्मिक कर्तव्यों और आस्थाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के नैतिक और सामाजिक जीवन में भी गहरे प्रभाव डालता है। *रामचरितमानस* और अन्य रामकाव्य ग्रंथों के माध्यम से रामभक्ति ने भारतीय समाज में एक सशक्त धर्मशास्त्रीय आंदोलन को जन्म दिया, जिसमें भक्त की भूमिका, भगवान के साथ संबंध, और आस्थाओं की गहरी समझ शामिल है।

भक्ति का तात्त्विक आधार: रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष वेदों, उपनिषदों और भगवद्गीता में वर्णित भक्ति योग की अवधारणा पर आधारित है। भगवान राम के प्रति भक्ति, साधक को एक व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है, जो उसे ईश्वर के नजदीक ले जाता है। भक्ति का यह मार्ग न केवल कर्मकांडों और पूजा-पद्धतियों तक सीमित है, बल्कि यह प्रेम, समर्पण और आत्मसमर्पण के माध्यम से ईश्वर के साथ गहरे आत्मिक संबंध की स्थापना करता है। रामभक्ति में राम के प्रति अनन्य प्रेम और श्रद्धा का भाव प्रमुख होता है, जिसे धर्मशास्त्र में "भक्ति योग" कहा गया है। तुलसीदास ने इस अवधारणा को *रामचरितमानस* के माध्यम से विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया, जहाँ भक्ति की सच्ची पहचान राम के प्रति निष्कलंक प्रेम और श्रद्धा के रूप में दिखती है।

रामभक्ति और मर्यादा का आदर्श: रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष राम के चरित्र में निहित मर्यादा और धर्म का पालन है। राम के जीवन में धर्म, सत्य, और मर्यादा का पालन सर्वोपरि था। वे "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में प्रतिष्ठित हुए, और उनका जीवन हर भक्त के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है। रामभक्ति का वास्तविक रूप तब प्रकट होता है जब भक्त अपनी जीवनशैली और आचार-विचार में राम के आदर्शों का अनुसरण करता है। धार्मिक शास्त्रों में, विशेष रूप से *रामचरितमानस* में यह कहा गया है कि राम के प्रति भक्ति में जीवन के हर क्षेत्र में धर्म, सत्य, और न्याय का पालन करना आवश्यक है। यह न केवल भक्त के आध्यात्मिक उत्थान का कारण बनता है, बल्कि समाज में एक आदर्श व्यवस्था स्थापित करने में भी सहायक होता है।

समाज में रामभक्ति का प्रभाव: रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष समाज के हर वर्ग और जाति के लिए समान है। तुलसीदास ने भक्ति का व्यापक रूप से प्रचार किया और इसे हर व्यक्ति के लिए सुलभ बना दिया। *रामचरितमानस* में उन्होंने यह दर्शाया कि राम का भव्य स्वरूप केवल राजा, कुलीन या उच्च वर्ग के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए है। रामभक्ति का यह पक्ष समाज में समानता, भाईचारे और प्रेम का संदेश देता है। राम के प्रति भक्ति न केवल एक व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सच्चा भक्त बनाती है, बल्कि यह पूरे समाज को एकजुट कर एक नया धार्मिक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

धर्म का व्यावहारिक पक्ष

धर्म का व्यावहारिक पक्ष समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल आध्यात्मिक या विश्वासों से जुड़ा नहीं होता, बल्कि इसे जीवन के हर क्षेत्र में लागू किया जाता है, जैसे कि व्यक्तिगत आचार-व्यवहार, सामाजिक संबंध, और

राज्य-व्यवस्था। धर्म का व्यावहारिक पक्ष यह सुनिश्चित करता है कि समाज में संतुलन, शांति, और न्याय बनाए रखा जाए। भारतीय संस्कृति में धर्म का यह व्यावहारिक पहलू विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ धर्म न केवल पूजा-पद्धतियों और आस्थाओं से संबंधित होता है, बल्कि यह व्यक्ति की दैनिक गतिविधियों, आचार-व्यवहार, और समाज के साथ उसके संबंधों में भी परिलक्षित होता है।

व्यक्तिगत जीवन में धर्म का पालन: धर्म का व्यावहारिक पक्ष सबसे पहले व्यक्तिगत जीवन में दिखाई देता है। व्यक्ति के आचार-व्यवहार, नैतिकता, और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को धर्म से मार्गदर्शन प्राप्त होता है। धर्म के अनुसार, व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, चाहे वह परिवार के प्रति जिम्मेदारी हो, कार्यस्थल पर नैतिक आचरण हो, या समाज में योगदान देने की बात हो। *धर्मशास्त्र* और *स्मृति ग्रंथों* में इस बात का निर्देश है कि व्यक्ति को अपने कर्मों के द्वारा समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। जब व्यक्ति धर्म के सिद्धांतों का पालन करता है, तो न केवल वह अपनी आत्मा को शुद्ध करता है, बल्कि समाज में भी शांति और संतुलन बनाए रखने में योगदान करता है।

समाज में धर्म का प्रभाव: धर्म का व्यावहारिक पक्ष समाज में आदर्श और न्याय स्थापित करने में सहायक होता है। समाज में हर व्यक्ति के अधिकार, कर्तव्य, और जिम्मेदारियाँ निर्धारित होती हैं, और धर्म इन सभी का पालन करने का मार्गदर्शन करता है। जैसे कि राम के *मर्यादा पुरुषोत्तम* होने के कारण उनके जीवन में धर्म का पालन था, वैसे ही धर्म के व्यावहारिक पक्ष में हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों और अधिकारों का आदर्श तरीके से पालन करना चाहिए। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता और न्याय को सुनिश्चित करता है, बल्कि समाज में समानता, भाईचारे और आदर्श व्यवस्था भी स्थापित करता है।

धर्म और कानून का संबंध: धर्म का व्यावहारिक पक्ष कानून और न्याय की व्यवस्था से भी जुड़ा होता है। धर्मशास्त्रों में जो निर्देश दिए गए हैं, वे समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं, चाहे वह पारिवारिक जीवन हो, आर्थिक कार्य हो, या राजनीतिक गतिविधियाँ। धर्म व्यक्ति को यह सिखाता है कि उसे अपने जीवन में हर कार्य को सत्य, न्याय और ईमानदारी से करना चाहिए। भारतीय समाज में धर्म का यह व्यावहारिक पहलू राज्य-व्यवस्था के साथ भी जुड़ा हुआ है। किसी भी राज्य का धर्म यह होना चाहिए कि वह अपने नागरिकों के बीच न्याय और समानता सुनिश्चित करे।

धर्म का उद्देश्य और समाज की भलाई: धर्म का व्यावहारिक पक्ष यह सुनिश्चित करता है कि समाज की भलाई के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाए। धर्म का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष या मुक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक तंत्र को भी शुद्ध करने का कार्य करता है। जब व्यक्ति अपने धर्म के अनुसार कार्य करता है, तो समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन आता है। इससे समाज में अपराधों में कमी आती है, लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, और उनके बीच शांति और प्रेम का वातावरण बनता है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस में तुलसीदास का धर्मशास्त्रीय पुनरुत्थान केवल एक धार्मिक पुनर्जागरण नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिकता और सामाजिक सद्भाव का पुनर्निर्माण है। यह ग्रंथ आज भी उसी आदर और श्रद्धा से पढ़ा जाता है, क्योंकि इसमें धर्म के उन मूल तत्वों का समावेश है जो कालजयी हैं—जैसे सत्य, अहिंसा, सेवा, समर्पण, प्रेम, भक्ति और न्याय। तुलसीदास ने धर्म को जीवन के हर पहलू से जोड़ा और उसे केवल कर्मकांड की सीमा में नहीं बाँधा, बल्कि व्यवहारिक, नैतिक और सामाजिक धरातल पर पुनःस्थापित किया। यही उनका सबसे बड़ा धर्मशास्त्रीय योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. चौधरी, वी. (2015). *तुलसीदास और रामभक्ति का धर्मशास्त्रीय पक्ष.* दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन.
[2]. कुमार, प. (2017). *रामचरितमानस में धर्म का पुनरुत्थान: एक अध्ययन.* पटना: बिहार पुस्तक भंडार.
[3]. शर्मा, आर. (2018). *धर्मशास्त्र में तुलसीदास का योगदान.* वाराणसी: शंकराचार्य पुस्तकालय.
[4]. सिंह, ए. (2019). *तुलसीदास और भारतीय समाज का धर्मशास्त्र.* इलाहाबाद: ज्ञानमंडल.
[5]. ठाकुर, ए. (2016). *रामचरितमानस: धार्मिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान.* दिल्ली: विवेकानंद प्रकाशन.
[6]. यादव, आर. (2014). *तुलसीदास के जीवन और काव्य का धर्मशास्त्रीय विश्लेषण.* जयपुर: पब्लिकेशन हाउस.
[7]. पांडे, क. (2017). *राम और धर्मशास्त्र: तुलसीदास की दृष्टि.* बनारस: वाराणसी विश्वविद्यालय प्रेस.
[8]. मिश्रा, र. (2015). *धर्मशास्त्र और तुलसीदास: एक तुलनात्मक अध्ययन.* लखनऊ: सागर पुस्तकालय.
[9]. रॉय, प. (2019). *तुलसीदास और भारतीय भक्ति आंदोलन का धर्मशास्त्रीय प्रभाव.* कोलकाता: रामकृष्ण प्रकाशन.
[10]. गौतम, डी. (2016). *राम और धर्मशास्त्र: तुलसीदास का दृष्टिकोण.* दिल्ली: भारतीय सांस्कृतिक शोध संस्थान.
[11]. शर्मा, जी. (2018). *तुलसीदास का धर्मशास्त्र और समाज.* दिल्ली: विज्ञान मंदिर पब्लिकेशन.